International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 831-833

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी का उर्जस्वित स्वरूप

डॉ0 सुरसरि तरंग मिश्र

प्रवक्ता–हिन्दी, उ0प्र0 सैनिक स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

नारी प्रकृति का मूल है वह आदिशक्ति है एवं जन्म का हेतु भी। समाज में नारी विभिन्न रूपों को जीती है, भोगती है अपने कर्तव्यों का सम्यक निर्वहन करते हुए आत्मोत्सर्ग करती है। समाज, घर परिवार को सम्पूर्णता में अपना योगदान देती आई है तद्यपि उसके व्यक्तित्व को साहित्य में सम्यक एवं यथोचित स्थान नही मिला जिसकी वह अधिकारिणी रही है। वह उसे नही मिला। साहित्य सृजन का उद्देश्य समाज को नवीन दिशा देना एवं उत्कृष्टता की ओर ले जाना भी है। समाज की विद्रूपताओं, विसंगतियों का निवारण कर एक नवीन दृष्टि संपन्न एवं श्रेष्ठ समाज का निर्माण साहित्य का लक्ष्य है। वृन्दावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों की नारियाँ आत्मोत्सर्ग, कर्त्तव्यपरायणता तथा देश प्रेम दायित्व के गुणों से विभूषित होने के कारण सर्वग्राह्य ही नहीं सर्वोपरि है। वृन्दावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यासों में नारी को शौर्य सम्पन्न, देश प्रेमी, निर्भीक एवं स्वाभिमानी रूप में चित्रित किया है। जो राष्ट्र की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करती है। वह वह ऊर्जा की अक्षय भण्डार है और समाज के लिए आदर्श भी।

उद्देश्य

मुगल साम्राज्य में औरंगजेब के निधनोपरान्त केन्द्रीय सत्ता के विश्रृंखलित होने, देशी नवाबों, राजाओं के पारस्परिक वैमनस्य के फलस्वरूप अंग्रेजों ने भारतीय अर्थ व्यवस्था के मूल में विघटन की स्थिति पैदा कर दी। जो भारत 18वीं तक आर्थिक प्रगति तथा व्यापार की दृष्टि से विश्व के शीर्ष स्तर पर गिना जाता था वही भारत अंग्रेजों की कूटनीति से दिग्भ्रमित हो गया। विदेशियों के प्रलोभन को भारतीय अपनी ज्ञान, चक्षुओं से परख न सके। अंग्रेजों ने भारतीय किसानों पर शिकंजा कसने के लिए, जमींदार, कारिन्दों के रूप में शोषक वर्ग पैदा किया। जिनसे भोली जनता को इनके चंगुल से बच पाना स्पप्न मात्र था। अंग्रेजों ने रेल, शिक्षण संस्थाओं की स्थापना भले ही अपने निहितार्थ की लेकिन भारतीयों मे भविष्य–दृष्टि को जागृत करने में अहम भूमिका निभायी। भारतीय उद्योगों का ह्रास, किसानों की दयनीय स्थिति, लार्ड डलहौजी की हड़प नीति से भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति घृणा के भाव पैदा होने लगे थे। वाल्टेयर, रूसों जैसे साहित्यकारों से भारतीय अवगत हुए। फ्रांस की राज्य क्रान्ति, बौद्धिक जागृति से भारतीयों में विवेक जागृत होने लगा। अवध को ब्रिटिश हुकुमत में मिलाने से भारतीय मुसलमान भी हिन्दुओं के साथ स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ा। स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीयता की अवधारणा से साहित्यकार भी अछूते न रह सके।

किसानों ने विद्रोह कर, सुधारकों ने जागृति पैदा कर, महिलाओं ने हड़ताल कर स्वाधीनता का दीप प्रज्ज्वलित किया। तर्क पर अधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने साहित्य दर्शन, कला और समाज में पनपती क्रान्ति को प्रबल रूप प्रदान किया। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में युगीन वातावरण उर्वरक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। युगीन साहित्यकारों ने अपनी ओजस्वी विचारों से जन सामान्य को सचेत किया। प्रेमचन्द ने युगीन समाज की कुरीतियों, अन्धविश्वासों को रेखांकित कर भारतीय समाज को सोचने पर विवश किया। वृन्दावन लाल वर्मा के व्यक्तित्व में युगीन वातावरण साकार हो उठा। वर्मा जी ने इतिहासकारों की विकृत मानसिकता को उजागर किया। ऐतिहासिक त्रुटि को दूर करने के लिए गम्भीर अध्ययन भी किया। प्रचलित भ्रान्तियों का निवारण कर समाज को आदर्श स्वरूप प्रदान किया। पांचवी कक्षा मे ई0 मार्सडन द्वारा लिखे इतिहास को पकड़कर सोया स्वाभिमान जागृत हो उठा। भारतीयों की पराजय के मूल में गर्म जलवायु को सुनकर क्रोध में आकर पुस्तक का पन्ना फाड़ डाला। वर्मा जी की इस प्रतिक्रिया इन शब्दों में देखा जा सकता है–'जिस मुल्क में लक्ष्मीबाई का पराक्रम प्रकट हुआ, राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन जैसे महानुभावों ने जन्म लिया, महाराणा प्रताप ने जीते जी हार नहीं मानी वह देश कैसे हार सकता है? प्रण किया कि खूब छानबीन करके लिखूँगा, इन फूटी पुस्तकों की कलई खेलकर सामने रखूँगा। वृन्दावन लाल के उपन्यासों के पात्र स्वाभिमान देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत हैं। नारी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, रामगढ़ की रानी, महारानी दुर्गावती जैसे अमर उपन्यास हैं जिनमें नवजागरण की अलख को प्रमुखता प्रदान की। वर्मा जी की कामना थी जब तक समाज में एकता स्थापित नहीं होगी राष्ट्रीयता के प्रश्नों का हल सम्भव नहीं है। लक्ष्मीबाई देशप्रेम की भावना से ओत–प्रोत है पति गंगाधर राव द्वारा नाट्यशाला को चलाने का प्रस्ताव सुनकर व्यथित होती हे–'इन दिनों इससे अधिक और हो भी क्या सकता है? राज्य का काम चलाने को दीवान, प्रजा को ठीक रास्ते पर लाने के लिए अंग्रेजी सेना है। गलती होने पर खुशामत कर ली बस सब काम ज्यों का त्यों चलता रहा।[1] रानी लक्ष्मीबाई के यह उद्गार राजाओं की अकम्रन्यता विवेकहीनता तथा आपसी फूट को रेखांकित करते हैं। रानी लक्ष्मीबाइ ने अपनी झांसी की स्वतंत्रता के लिए अनेक बार अंग्रेजों के दांत खट्टे किये। जीते जी हार नहीं मानी। झांसी को ब्रिटिश राज्य में मिलाने पर रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज गवर्नर को पर्दे की आड़ से कहती है–'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी। मैं केश मुण्डन तभी कराऊंगी जब हिन्दुस्तान को स्वराज मिल जाएगा।[2] रानी लक्ष्मीबाई को अपनी जनता पर पूर्ण विश्वास था। साधारण पान बेचने वाली तमोली भी रानी की देशभक्ति के लिए अपना सिर कटवाने को उत्सुक रहीत है। रानी लक्ष्मीबाई की स्वदेश प्रेम की भावना को देखकर संग्राम सिंह जैसा देशद्रोही भी शत्रओं की सेना का डटकर मुकाबला करता है। रानी लक्ष्मीबाई अपनी प्रजा के समर्पण की भावना को देखकर प्रसन्न है। उनके उद्गार खुशी का बोध कराते हैं–'जिस देश सागर सिंह सिंह जैसे सरीखे लोग जन्म लेते हैं वह स्वराज्य से बहुत दिनों तक वंचित नही रह सकता।[3] झलकारी कोरिन की निडरता, अदम्य साहस का लोहा अंग्रेजों ने भी माना। उसकी देश के प्रति समर्पण को देखकर अंग्रेज जनरल रोज कहने पर विवश होता है–'यदि भारतीय स्त्रियां एक प्रतिशत भी ऐसी पागल हो जाए जेसी यह है तो हमको हिन्दुस्तान अवश्य सब कुछ छोड़कर जाना पड़ेगा।[4] रानी लक्ष्मीबाई केवल गंगाधर की पत्नी ही नहीं है वह देश की स्वतन्त्रता चाहने वालों के हृदय की रानी है। झांसी की रानी उपन्यास स्वतन्त्रता संग्राम का दर्पण है। डॉ0 भगवान दास मोहर ने कहा

कि–वृन्दावन लाल वार्मा का उपन्यास झांसी की रानी केवल 1857 का ही नही अपितु समस्त क्रान्तिकारी प्रयास का प्रतिनिधित्व करती हुइ अहिंसात्मक सत्याग्रह के इस एकान्त श्रेय को ललकारती हैं।[5] झांसी की मिट्टी ने अनेक देश भक्तों को जन्म दिया। लक्ष्मीबाई, लाखी, झलकारी, सागर सिंह जैसे देश भक्तों की मात्र भूमि झांसी ही थी जो लाखी जंगलों में शिकार नहीं थकती, अटल के यहां स्वाभिमान युक्त जीवन जीती है। वहीं रानी की देश प्रेम की भावना का कंधे से कंधा मिलाकर समर्थन करती हैं लाखी का जन्मजात स्वाभिमान देशप्रेम की भावना को संवल प्रदान करता हे। आक्रमणकारियों द्वारा चारों ओर से घिर जाने पर घबरानी नहीं अपितु साहस के साथ रहती है– 'इनको मारकर मरूंगी' इसी दृढ़ निश्चय के साथ तलवार को हाथ में उठाकर आतताई के पेट में घोप देती है।[6] लाखी के बलिदान को देखकर मृगनयनी भी दहल जाती है। राजा मानसिंह को प्रजा के सुख–दुख और देशप्रेम के प्रति सचेत करती है।[7]

वृन्दावन लाल वर्मा का विश्वास था कि समानता के बिना देश का उद्धार संभव नहीं है उनके उपन्यासों में पात्र चाहे वह किसी भी धर्म का हो। राजाज्ञा को सर्वोपरि मानता है। स्वदेश प्रेम के लिए पीछे नही हटता। मृगनयनी उपन्यास का इब्राहीम खां भी राष्ट्रीयता से आते–प्रोत है। अपने साथियों को समर्पण के लिए प्रेरित करता हुआ कहता है–'आज हमारे तुम्हारे ईमान–धर्म की जाँच है आज तुम्हारे जनरल को अब्दाली की चिट्ठी का जवाब देना है। आज साबित करना है कि स्वामित्व से बढ़कर कोई भक्ति नहीं। आज दुनिया को दिखाना है कि हम अपने देश के लिए किस तरह लड़ और मर सकते हैं। मेरे जवानों हिन्दुस्तान के नाम पर टूट पड़ों, इन जालिमों पर, देश द्रोहियों पर'। अहमद शाह अब्दाली के सामने अपने घुटने नही टेकता मृत्यु निकट जानकर भी दया की भीख नहीं मांगता। अब्दाली की क्रूरता, बहशीपन इब्राहीम को पथ से विचलित नहीं कर पाती। समर्पण को ठुकराकर अपने अंग प्रत्यंगों को कटवाकर अब्दाली की देशभकित को दर्शाता है। उसका विश्वास है कि मरी मृत्यु व्यर्थ नहीं जायेगी बल्कि इसी मिट्टी से अनेक सूरमा पैदा होरक मेरे मिशन को आगे बढ़ायेगी।[8] महारानी दुर्गावती उपन्यास वृन्दावन लाल वर्मा का मुगल सम्राट अकबर की दोगली नीति को उजागर करता हे। दुर्गावती की अदम्य देशभक्ति का लोहा अकबर भी मानता है। अकबर द्वारा प्रेषित पिंजड़े के साथ अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय इन शब्दों में देती है।–'हम अपने देश की रक्षा के लिए अन्तिम सांस तक लड़ेंगे, और तुम्हारे दंत खट्टै करते रहेंगे'।[9] वर्मा जी के पात्रों के लिए देश सर्वोपरि है। दुर्गावती अकबर की दोहरी मानसिकता को उजागर करती है जो सम्राट एक ओर दीन ए इलाही धर्म गौड़वान राज्य को हड़पने की इच्छा भी व्यक्त करता है। माधव जी सिंधिया उपन्यास में स्वयं माधव जी सिंधिया भी नाना फड़नवीस को पारस्परिक देृष को भुलाकर राष्ट्र के उद्देश्य हित देशप्रेम तथा स्वराज्य की भावना नष्ट न करने की सलाह देता है। गौरा परमात्मा को धन्यवाद देकर स्वराज्य के लिए सदा प्रयन्तशील रहने का संकल्प दुहराती है।[10]

वृन्दावन लाल वर्मा की नारयिां पुरूषें की अपेक्षा अधिक संकल्पवान हैं। पथ से विचलित नही होती परिस्थितियों का सामना भी करती हैं। रानी अवन्तिबाई उन्हीं गुणों से ओत–प्रोत है। युगीन संघर्षों से उसका जीवन कंचनमय हो गया। डिप्टी कमिश्नर के दुर्व्यवहार को देखकर रानी अवन्तिबाई का क्रोध देशभक्ति को दर्शाता है। अन्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता इन शब्दों में व्यक्त करती है–'कह देना अपने बाप अफस्र से अन्यास के लिए जीवन र्प्यन्त लडुंगी। सिर दे दिया जायेगा परन्तु धर्म नहीं दिया जायेगा। ''निश्चय है कि इन फिरंगियों परदेशियों को अब अपने देश की धरती पर और अधिक नहीं रहने दिया जाएगा8 रानी युगीन राजाओं की निष्क्रियता से व्यथित है। देश की रक्षा का दायित्व समझकर राजा उमराव सिंह को सोचने को विवश करती है। स्वयं कागज के टुकड़े पर कर्त्तव्यबोध तथा चूड़ी भेजकर स्वाभिमान को झकझारेना चाहती है जिससे फिरंगियों का सामना किया जा सके। रानी की देशभक्ति को देखकर ब्रिटिश सेना के सिपाहियों में ग्लानि का भाव पैदा हुहा। शराब का प्रस्ताव ठुकराकर अपनी देशभक्ति को उजागर करता है–'शराब के कीड़े मकोड़ों की यह हिम्मत जो हमारे देश की स्त्रियों को गाली देने पर आ जाए। जवान उखाड़ लूंगा।''[11] रानी अवन्तिबाई किसानों के प्रति सहानुभूति का भाव देश प्रेम की भावना को उद्दीप्त करता है। शंकरशाह मौत को गले लगाते समय भी अंग्रेजी सरकार का पानी पीना अपवित्र समझता है।[12]

वर्मा जी के सभी पात्रों के लिए देश्ज्ञ सर्वोपरि है। देश के प्रति समर्पण की भावना को वर्मा जी ने अपनी कहानी में इन शब्दों में व्यक्त किया है। बुन्देलखण्ड के प्रति उनकी एक–एक भावना परिवार के इतिहास से जुड़ी हुई थी। वर्मा के व्यक्तित्व में देश प्रेम का भाव पैतृक विरासत में मिला। परदादा की प्रतिबद्धता–मैं तो जिन्दा हूं जब तक दम में दम है अंग्रेजों से लडूंगा। ''दादा की इन बातों ने वर्मा जी के व्यक्तित्व में जातीय स्वाभिमान और राष्ट्रीयता की भावना को उवर्रक पृष्ठभूमि प्रदान की। वर्मा जी की दृष्टि राष्ट्र के पुननिर्माण पर रही जिसे उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों द्वारा सार्थक भी बनाया। वर्मा जी ने जातीय गौरव, राष्ट्र प्रेम, आदर्श स्थापना तथा वीर पूजा की भावना से प्रेरित होरक ही ऐतिहासिक उपन्यास के क्षे. में पदार्पण किया। वर्मा जी ने देश प्रेम की भावना को पुष्ट करने के लिए नारी को केन्द्रीय भूमिका के रूप में चित्रित कर एक तीर से दो शिकार तलाश किये। एक ओर नारी को स्वाभिमान प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाया दूसरे राष्ट्रीय नवजागरण की ज्योति को क्रमबद्धता प्रदान करने के लिए पुरूषों के साथ खड़ाकर मानवतावाद की प्रतिष्ठा की। स्वयं वर्मा जी साहित्य सृजन के साथ ही देश प्रेमियों, क्रान्तिकारियों को समय–समय पर सहायता भी पहुँचाते थे उनकी सच्ची सहानुभूति उग्रवादियों के साथ थी। झांसी के जिलाधिकारी द्वारा बनाइ गई सभा से सम्बन्ध होने पर भ्झी वर्मा के ह्रदय में देश्ज्ञ के प्रति समर्पण के भाव विद्यमान थे। वर्मा जी के चरित्रों में यह जन्मजात गुण रहता है कि अपने लिए अपनी मातृभूमि के लिए मूल्यवान से मूल्यवान सुखनिधि की बलि दे दें। यह विशेषता उनके उपन्यासों को ओर भी सराहनीय बना देती है।''[13]

निष्कर्ष

वृन्दावन लाल वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में वर्णित बुन्देलखण्ड भारत भूमिका का वह अंश था जिसने लक्ष्मीबाई, लाखी, इब्राहीम, महारानी दुर्गावती, अहिल्याबाई जैसे अमर पात्रों को जन्म दिया। जिन्होंने हंसते–हंसते मृत्यु को गले लगाया लेकिन देश की अस्मिता की रक्षा में कोताही नही बरती। वर्मा जी का मानना था कि गांधी के ऐतिहासिक आन्दोलन ने जनता को निर्भीक बनाया। वर्मा जी का गरम दल को समर्थन करना उनके देश्ज्ञ प्रेम समर्पण की भावना को दर्शाता है। उनका मानना था कि देश की रक्षा पारस्परिक एकता, समर्पण की भावना तथा कर्त्तव्य बोध से ही सम्भव है। जब भी पाठक के समक्ष ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रसंग आयेगा वर्मा जी स्वदेश्ज्ञ के प्रति समर्पण की भावना के फलस्वरूप सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे। राष्ट्रीयता की भावना को देखकर वृन्दावन लाल को नवजागरण का अग्रदूत कहा जाता है। वृन्दावन लाल वर्मा ने भारतीय नारी को उसकी स्थापित दीनहीन मूर्ति से निकालकर प्रखर, ओजस्वी, क्रान्तिधर्मा एवं शक्तिपुंज के रूप में स्थापित किया है। जो भारतीय समाज में आगे बढ़कर नेतृत्व करती है। और साहित्य में प्रबल, प्रतापी एवं ऊर्जा की प्रतिमूर्ति के रूप में स्थापित हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अपनी कहानी–वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 20, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण–1973।
2. वृन्दावन लाल वर्मा समग्र सं0 विश्वनाथ प्रसाद सिंह पृ0 830 हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी तृतीय संस्करण 1994।
3. झांसी की रानी– वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 124 मयूर प्रकाशन झांसी संस्करण–1955।
4. झांसी की रानी– वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 214 मयूर प्रकाशन झांसी संस्करण–1955।
5. 1857 के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास– डा0 भगवानदास मोहरा पृ0 299 कृष्णा ब्रदर्श अजमेर संस्करण–1976।
6. बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य– श्री रामचरण मिश्र पृ0 111 राजकमल प्रकाशन दिल्ली संस्करण–1969।
7. मृगनयनी– वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 310 प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
8. माधव जी सिंधिया पृ0 265 मयूर प्रकाशन झांसी, प्रथम संस्करण–1959।
9. भुवन विक्रम– वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 341 मयूर प्रकाशन झांसी 1959।
10. महारानी दुर्गावती–वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 269 मयूर प्रकाशन झांसी प्रथम संस्करण–1956।
11. रामगढ़ की रानी–वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 230 मयूर प्रकाशन झांसी प्रथम संस्करण–1955।
12. रामगढ़ की रानी–वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 65 मयूर प्रकाशन झांसी प्रथम संस्करण–1955।